

Teacher - A.K. Sinha

Date _____
Page _____

Topic - Mental Mechanism (मनोरचना)

पृ. 276
पृ. 277

प्रतिगमन (Regression) :- मनोरचना में Regression का तात्पर्य पूर्व की अवस्था या प्राथमिक अवस्था में लौटने से है। हमारे दैनिक जीवन में प्रतिगमन/Regression के अनेक उदाहरण मिलते हैं, जैसे बचकाना व्यवहार की संज्ञा दी जाती है। जब एक बच्चा लम्बे बच्चों जैसा व्यवहार करता है, नव उल्टे व्यवहार की बचकाना बचकाना इतने है। लम्बे के जैसे व्यवहार के पीछे सुख के नियम (Pleasure principle) का प्रबल हाथ रहता है। अधिकांश लम्बे का सुख उद्देश्य सुख का आनन्द प्राप्त करना होता है। परन्तु विशाल और गभीर वातावरण की बाधाओं के कारण निराशा, असफलता या क्षमों का शिकार होते हैं, जिससे दुःख की अनुभूति होती है। इससे 'सुख' की तल प्रवृत्ति कुण्ठित होती है। इससे उत्पन्न तनाव से शहत प्राप्त होने हेतु वह बचकाना व्यवहार करने लगता है, जिससे उसे सुख की अनुभूति होती है। एक प्रकार प्रतिगमन (Regression) द्वारा लम्बे की तल प्रवृत्ति - सुख प्राप्त का संतुष्ट होती है और निराशा से उत्पन्न तनाव में कमी होती है।

प्रतिगमन (Regression) दो प्रकार का होता है :-

- (a) अहं प्रतिगमन (Ego Regression), :-
- (b) यौन या लैंगिक प्रतिगमन (Libidinal Regression) ।
- (a) अहं प्रतिगमन (Ego Regression) - अहं प्रतिगमन से तात्पर्य प्राथमिक वातावरण की अभिरूपियों में जागरीत होने से है। जब एक बच्चा या पूर्ण लम्बे लम्बे बच्चों की तरह पतंग उड़ाने, गिरणी-डंडा खेलने जैसा

अहं (Ego) अभेदन के दमित वास्तविक-प्रेरण (Real motive or desire) के ही विपरीत-प्रेरण का प्रदर्शन करता है। जैसे - दृष्टा के भाव की प्रेरणा का प्रदर्शन करना अथवा प्रेम भाव की प्रेरणा के भाव को प्रकट करना। Reaction Formation का परिभाषित करते हुए डिविडन का मत है कि -

"By Reaction formation we mean the development of behaviours which are diametrically opposed to the unconscious wish."

उपर्युक्त परिभाषा से यह स्पष्ट होता है कि "प्रतिक्रिया-निर्माण" (Reaction formation) की मनोरचना द्वारा ~~अ~~ अभेदन के दमित वास्तविक इच्छा या विचार या भाव को गूँथ रखा जाता है, जिसके फलस्वरूप अद्वितीय प्रेरणा या इच्छाएँ और अधिक प्रबल रूप से दमित होती हैं। उदाहरण के लिए - एक पुरुष पत्नी से दृष्टा करते है अपना वायसण्ड करते है वही वाद्यन (यौन) से। उसके प्रबल प्रेम भाव या प्रसन्न भावों को भाव प्रकट करते है। इसी प्रकार निर्दयता के बदले बनावटी दया दिखाना भी प्रतिक्रिया निर्माण का उदाहरण हो सकता है।

माय: पत्नी के दैनिक जीवन में भी इस मनोरचना का अद्विधाधिक प्रयोग करते देखा जाता है। इस सम्बन्ध में कहावत भी चरित्रार्थ होती है कि मुँह में राम काल में बुरी, मुँह राम गुणगुण से पहेँ, बगुला भगत बगना, सौ मुँह खाका किलो पनी टग को, आदि।

भावधारों का प्रदर्शन करता है, तब उसे अंतःप्रतिक्रमण कहते हैं। ऐसा तब देखा जाता है जब व्यक्ति बाल्यवस्था की कठिनाइयों, जटिलताओं आदि से दूर जाता है अथवा समाधान में असफल हो जाता है। इससे वह अपने सुरक्षा के लिए बच्चों की वस्तुओं के प्रति अभिजाति लेने लगता है और उनकी ही तरह व्यवहार करने लग जाता है, क्योंकि वे सुरक्षा तथा आनन्ददायक होते हैं। इससे निराशा व उल्लास तथा में कमी आती है।

16) यौन प्रतिक्रमण (Libido Regression) :- इस प्रतिक्रमण का तात्पर्य यौन या लैंगिक प्रवृत्तियों (libidinal urges) के प्रतिक्रमण से है। जैसे :- अंगुठा चूसना, नारियलों को दाँत से काटना, हस्तमैथुन करना आदि कल्पकालीन प्रवृत्तियाँ बाल्यवस्था की लैंगिक विशेषताओं के लक्षण हैं।

प्रतिक्रमण के अत्यधिक दोनो प्रकारों में ध्वनिवत् उल्लास होता है। लेकिन इनके बीच एक मुख्य अंतर यह है कि अंतःप्रतिक्रमण होने पर यौन-प्रतिक्रमण को भी होना जरूरी होता है; जबकि यौन-प्रतिक्रमण होने पर अंतःप्रतिक्रमण का होना जरूरी नहीं होता है। प्रतिक्रमण आत्मिक संघर्ष से उल्लास तथाव को कम करने की एक मुख्य मंजूरचना है। उदाहरण स्वरूप - परीक्षा में असफल छात्र का बच्चों की तरह झूट-झूट का रोना, उसके होने पर भी बच्चों की तरह माँ की गोद से चिपकना, लाडु-प्यार आदि दैनिक जीवन में सामान्य प्रतिक्रमण।

17) प्रतिक्रिया निर्माण (Reaction Formation) :-

प्रतिक्रिया निर्माण (Reaction formation) भी एक मुख्य आत्मिक मंजूरचना है। इस मंजूरचना द्वारा व्यक्ति के

इन कदाकों से प्रतिक्रिया-निर्माण की मजोर-पन का ही संकेत मिलता है। दैनिक जीवन में कुछ नेताकारा मजोर-पन के बिछु-जोरदार भाषण देना या अभिमान-पलाना, परिशरीण पति द्वारा अपनी पत्नी को परिशरीण क्लासा उल्लेख अलां-पार काना आदि-जवहारों से भी प्रतिक्रिया-निर्माण का ही संकेत मिलता है। इस मजोर-पन द्वारा अंत को यह ज्ञान मिलता है कि यह यैवक रूप से किजभाजवहार द्वारा वास्तविक प्रेरणा की और अधिक प्रवृत्त रूप से दर्शित भा देता है और इस प्रकार उल्लेख-तनाव के प्रभावों से बच जाता है।
